भाषा - पीयूष

समाचार पत्र की पंजीयन संख्या- KARHIN / 2010 / 33931

वर्ष VIII अंक 4

15 मार्च 2020

सर्वज्ञं तदहंवन्दे परंज्योतिस्तमोपहम् प्रवृत्तां यन्मुखाद्देवी सर्वभाषा सरस्वती।

महा शिवरात्रि

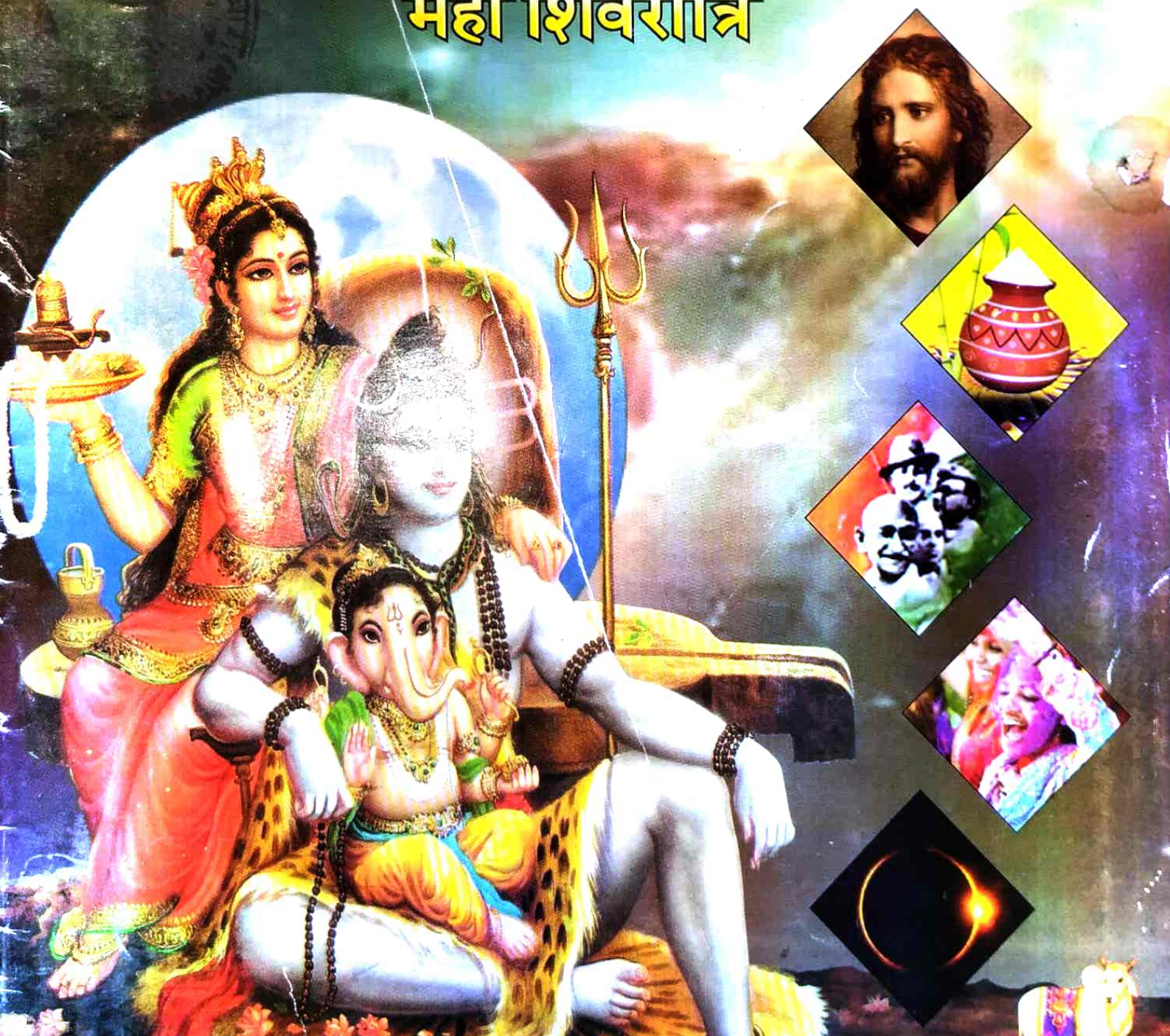

कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति की त्रैमासिक मुखपत्रिका

* भाषा-पीयूष *

समाचार पत्र की पंजीयन संख्या- KARHIN / 2010/33931

मानव संसाधन विकास मंत्रालय(शिक्षा-विभाग)
भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

दक्षिण भारत का सांस्कृतिक,
सामाजिक, साहित्यिक, वैचारिक
त्रैमासिक पत्रिका
भाषा-पीयूष

भूतपूर्व संपादक :
स्व.प्रो. ना.नागप्पा
स्व.एच्.वी. रामचंद्रराव

संपादक/ संपाद
डॉ. वि.रा. देवगिरी

स्वामित्व: कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति
जयनगर, बेंगलूरु - 560 011
मो. संख्या - 9342442555

मुद्रक : श्री वेंकटेश्वर प्रिंटिंग प्रेस,
जे.पी. नगर, बेंगलूरु - 560078.

प्रकाशन स्थल :
कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति जयनगर,
बेंगलूरु - 560 011

दूरवाणी व फैक्स संख्या - 0802656891
E.Mail-khpsamithi11@g.mail.com

त्रैवार्षिक चंदा रु.200/-आजीवन-1000
प्रतिअंक मूल्य रु. 20/-

वर्ष - आठवाँ अंक -4

विषय-क्रम

1. संपादकीय 2
2.विजयपुर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठि -रिपोर्ताज
- प्रा. धन्यकुमार बिराजदार 3
3. शिग्गाव (हावेरी) में आयोजित संगोष्ठी- विवरण
- डॉ. बी.वाय.तोंडिहाळ 4
4. अंतर्राष्ट्रीय बहुभाषा कवि गोष्ठी - डॉ.वि.रा.देवगिरी 5
5. मातृभाषा की महत्ता- हिं.प्र. समाचार से साभार 6
6. 'राष्ट्रीय उत्सव और स्तब्ध चित्र' - श्री.एन.वरदराजन् 7
7. कोई अन्याय नहीं किया - डॉ. गोपाल कृष्णभट्ट 'आकुल' 8
8. विद्या और मुक्ति - डॉ.वि.रा.देवगिरी 10
9. पहचान - धन्यकुमार बिराजदार 11
10. बलिदान- श्रीमती संध्या दत्ता कदम ,प्रहरी - श्रीमती पुष्पाराव 12
11. स्वामी विवेकानंद- संकलित 13
12. खुशियाँ और प्यार बाँटने का त्योहार -प्रो.व्ही.एस. पाटील 16
13.धिक्कार रहा गणतंत्र दिवस - अशोक सोनी 17
14. डॉ. फ.गु. हळकट्टी जी का सामाजिक एवं साहित्यिक योगदान
- डॉ.एस.टी. मेरवाडे 18
15. पर्यावरण - डॉ. मधु भावद्वाज, आग्रा 20
16. सर्वतोमुखी प्रतिभा के कलमकार जयशंकर प्रसाद
- डॉ.गुलाब राठोड 21
17. कहानियें में ममता कालिया का योगदान - संग्रहित 24
18. वंदना -डॉ.वि.रा.देवगिरी 26
19. महादेवी वर्मा जी की जिंदगी और मानसिकता
-प्रो. गणेश किणि. एम.एस. 27
20. देवनागरी दोहे -विज्ञान व्रत 29
21.साध्वी रेक्म्मा - डॉ.वि.रा.देवगिरी 30
22. बापू -डॉ.एस.कशिश वसी, चाणक्य -नीति-प्रा,गणेश किणी 32

'भाषा-पीयूष' में प्रकाशित लेखकों/ कवियों की रचना विवरणों से समिति एवम् संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवाद बेंगलूरु न्यायालय में अवधाये।

हुए, लेकिन उनके अनुशासन के डर से तुरंत औजार उठाते हुए काम में मशगूल हुए। इंजीनियर सीधे मेरे पास आए और चाबी देकर बोलने लगे, ' गाडी अच्छी है, जरूरी काम था, किसी दूकान जाना था। दूकान दूर होने के कारण देर हुई।''

''ठीक है साब, काई बात नहीं।'' मैं गद्‌गद् हो गया था।

'' अरे सुनना डिग्गी में बॉक्स हैं, खोलकर सभी को देना और शाम छः बजे लौटूँगा तो मेरे लिए भी रखना। समझे ?''

तभी उनके कार ड्राइवर ने कार स्टार्ट की और इंजीनियर उसमें बैठकर चले गए। काँपते हुए मैंने मेरी टू-व्हीलर की चाबी ली और डिग्गी खोलते ही चकित रह गये। एक बुके के साथ चिट्ठी मिली, जिसमें लिखा गया था, ' सतीश, तुमने पाई -पाई जोड़कर गाड़ी खरीदी और वह भी नगद रूप से । दूसरे मजदूरों की तरह कही बैंक या फाइनान्स से कर्ज न लेकर । तुम्हार अभिनंदन''।

अब तो मेरे लिए इंजिनियर ने अलग ही पहचान बनाई थी। गाड़ी मेरी और मिठाई उनकी ।

बलिदान

-श्रीमती संध्या दत्ता कदम

वतन पर जान कुर्बान करेंगे, माता भारती की शान बचायेंगे
बहादूरी आगे बढ़ते जाना, दुश्मनों को मिटा देना।
लहू बिछाये महाता का मान बढाते जाना
गद्दार न घुसपैट करे, न सरहद पार करे
उने चुन-चुनकर मारे, फिर कभी न निहारे
अपने गुलिस्थान पर नाज करना
अमन चयन से जीते रहने
कश्मिर हमारा स्वर्ग है, आतंक कैसे फैलाएगा ?
कहा नहीं सुनेगा तो, गोली खाकर मरेगा।
हर सितम झेलकर भी माँ तुझे हम बचायेंगे
सुरक्षा तेरी करते करते, खुद की जान मिटा देंगे।
दुश्मनों की मुंड उढायेंगे, तेरे चरनों में चढाएँगे।
लाख बाधा आने पर भी हम तुझे सजायेंगे।
नादिर कितना होशियार रहे हम उसे मिटायेंगे।
हर पल तेरी याद में, हम अपनों से छुट जायेंगे।
गम नहीं खुद मिटने से, हम कहेंगे अभिमान से
भारत माता अमर रहे बीरों की बलिदार से। *

प्रहरी

-श्रीमती डॉ. पुष्पाराव

सरहद पर बैठा अकेला प्रहरी
इस तन्हाई में साथ है उसकी यादें घनेरी
याद आ रहे हैं माँ के वे आँसू
बाप का मुरझाया सा चेहरा
घूंघट के आड में उदास नया चेहरा
चंद बातें वादें और रातें जो गुजारे
फिर भी गर्व से सीनाताना
देश का जो ठहरा वह प्रहरी।
नादान ये नहीं जानता
देश को सरहद के उसपार से नहीं खतरा उतना
देश के नेता, अफसर आतंकवादियों से जितना
करवाकर दंगे मरवाकर लोगों को ये नेता
कर रहे हैं कुर्सी पक्की, भर रहे हैं झोलियों अपनी।
कभी सोचता है भरकर आँखों में आँसू
शायद लौटेगा तिरंगा ओढे जिस दिन अपने घर
सूखेंगे माँ के आँसू कहेंगे मुझको था गर्व उस पर
आज सारा देश कर रहा है गर्व उस पर
शहीद कभी मरते नहीं ,हो जाते हैं अमर ।
सरहद पर बैठा अकेला प्रहरी।। **

समाचार पत्र की पंजीयन संख्या– KARHIN / 2010/33931

शिग्गांव समापन समारोह में डॉ. तोंडीहाल जी के साथ
डॉ. हनुमय्या जी और विनय कुमारजी ।

From :

Published By :
Karnataka Hindi Prachara Samithi
#6/249, 3rd Cross, 1st Block, Jayanagar
(Near Ashoka Pillar) Bengaluru : 560 011.
Telefax : 080-2656 8891
E-mail : khpsamithi11@gmail.com

To.
Smt. Sandya Datta Kadam
Canara Welfare Trust
Divekar College of Commerce
Kodibag Karawar-581301
(U.K)
(M) 09448796762

Printed at : Sree Venkateshwara Printing Press. Bengaluru : 560 078 ✆ 080-2244 4763